ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 11 अंक 46 | 3 से 9 मार्च, 2016 | दयानन्दाब्द 192 | सृष्टि सम्वत् 1960853116 सम्वत् 2072 | फा. कृ. 09

सार्वदेशिक सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की गरिमामयी उपस्थिति में मनाया गया

आर्य समाज दक्षिण अफ्रीका का 110वाँ तथा आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका का 90वाँ वार्षिकोत्सव

दक्षिण अफ्रीका के आर्यजन नस्लवाद, नशाखोरी तथा एड्स जैसी भयानक बुराईयों के विरुद्ध करें संगठित प्रयास

– स्वामी आर्यवेश

आर्य समाज दक्षिण अफ्रीका का 110वाँ तथा आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका का 90वाँ स्थापना दिवस गत दिनों 12 से 14 फरवरी, 2016 तक डरबन शहर के एग्जीबिशन सेन्टर में बड़ी धूमधाम के साथ मनाया गया। इस अवसर पर देश–विदेश की महान हस्तियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। इस ऐतिहासिक कार्यक्रम में प्रो. सुदर्शन जगेसर तथा उनके अन्य साथी मॉरीशस से, श्री अनिल कपिला व श्री मवांगी शास्त्री कीनिया से, डॉ. रजनी टेलर युगांडा से तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, श्री विनय आर्य, तथा श्री वाचनोनिधि, आचार्य सन्तराम आदि भारत से सम्मिलित हुए। 12 फरवरी को विभिन्न देशों से आये प्रतिनिधियों को आर्य समाज की स्थानीय संस्थाओं तथा गाँधी संस्थान आदि प्रमुख स्थानों पर दर्शनार्थ घुमाया गया। 13 फरवरी को दिनभर विभिन्न देशों से पधारे प्रतिनिधियों ने आर्य समाज में दक्षिण अफ्रीका चेप्टर पर गम्भीरता से विचार मंथन किया और इस पर अपनी सहमति बनाई। 13 फरवरी को सायं 6 बजे से एग्जीबिशन केन्द्र में विशाल सभा का आयोजन किया गया जिसमें सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त दक्षिण अफ्रीका के केन्द्रीय मंत्री माननीय श्री प्रवीण गोरधन, अफ्रीका नेशनल कांग्रेस के क्वाजुलुनटाल प्रान्त के नेता श्री सिसले जिकालाला, श्री लोगी नायडू अध्यक्ष प्रान्तीय एसेम्बली डरबन, जस्टिस श्री चमन पटेल एवं आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका के प्रधान डॉ. बिसराम रामविलास आदि ने सम्बोधित किया। इस अवसर पर वेद ज्योति के एक विशेषांक का भी विमोचन स्वामी आर्यवेश जी, श्री प्रवीण गोरधन के कर–कमलों से सम्पन्न हुआ।

विशाल सभा को सम्बोधित करते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने इस ऐतिहासिक आयोजन के लिए साउथ अफ्रीका के अधिकारियों, कार्यकर्ताओं, पंडित तथा पंडिताओं को साधुवाद तथा बधाई देकर प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि जिन परिस्थितियों में भारत से अंग्रेजों द्वारा बंधुआ मजदूर बनाकर लाये गये हमारे पूर्वजों ने संघर्ष तथा बलिदान का इतिहास रचा तथा आर्य समाज की स्थापना की उससे वर्तमान पीढ़ी को प्रेरणा लेनी चाहिए। स्वामी जी ने दक्षिण अफ्रीका में नस्लवाद, नशाखोरी, एड्स तथा अन्य सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध कार्य करने के लिए कार्यकर्ताओं को प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि आर्य समाज सदैव सामाजिक न्याय के लिए कार्य करता रहा है। वर्तमान में भी इसकी विशेष आवश्यकता है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं वित्तमंत्री श्री प्रवीण गोरधन ने इस अवसर पर अपने विचार रखते हुए कहा कि समाज में प्रजातन्त्र को मजबूत करने तथा राष्ट्र में नैतिकता, ईमानदारी एवं आध्यात्मिकता को प्रचारित एवं प्रसारित करने के लिए आर्य समाज एवं आर्य प्रतिनिधि सभा जैसी संस्थाओं को महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए। उन्होंने आर्य समाज के द्वारा किये जाने वाले जन–कल्याण के कार्यों में भरपूर सहयोग करने का आश्वासन दिया। श्री प्रवीण गोरधन की उपस्थिति में सभा प्रधान श्री बिसराम रामविलास ने एक महत्त्वाकांक्षी प्रोजेक्ट घोषित करते हुए कार्यक्रम में उपस्थित हजारों लोगों की उपस्थिति में बताया कि आर्य समाज 'तृप्ति' नामक प्रोजेक्ट को शुरू करने जा रहा है जिसके अन्तर्गत उन ग्रामीण क्षेत्रों को ट्यूबेल (नलकूप) लगाकर निःशुल्क पानी उपलब्ध

शेष पृष्ठ 4 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

स्वर्ग लोक में प्रवेश कैसे मिले?

– स्वामी आत्मानन्द सरस्वती

ब्रह्मानन्द ने किसी महात्मा से सुना था कि स्वर्ग एक ऐसा लोक है जहाँ प्रकाश ही प्रकाश है। अन्धेरे का वहाँ नाम तक नहीं। चन्द्र, सूर्य तथा दूसरे प्रकाश युक्त नक्षत्रों में जितना प्रकाश दृष्टिगोचर हो रहा है यह सब उस प्रकाश स्तम्भ के छोटे–छोटे स्फुलिंग मात्र हैं। वहाँ आनन्द के अमृत की गंगा बह रही है। दुनियां में धधकती हुई भट्टियों में जलता हुआ प्राणी इस आनन्द की गंगा में स्नान कर शान्ति प्राप्त कर सकता है। व्याख्यान सुनने के पश्चात् ब्रह्मानन्द ने महात्मा जी से प्रश्न कर उत्तर से यह परिचय भी पा लिया था कि वहाँ मेरे रहने के लिये भी पर्याप्त स्थान है। मैं ही नहीं अपितु इस संसार के सभी प्राणी उस लोक में समा सकते हैं और उसके अनन्तर भी सारी जगह रिक्त पड़ी रह जावेगी। इस जादूभरी बात को सुनकर ब्रह्मानन्द के अन्तःकरण में विचार उत्पन्न हुआ कि यह तमाशा अवश्य देखना चाहिये। स्वर्ग लोक एक अद्भुत लोक है। इसका विहार करने में मुझे वंचित नहीं रहना चाहिये। स्वर्ग लोक को देखने का दृढ़ निश्चय कर ब्रह्मानन्द अपने नगर से चल पड़ा। कई दिनों की दौड़ धूप के बाद द्वार के समीप पहुँचा। अभी द्वार में घुसने भी न पाया था कि एक तीक्ष्ण ध्वनि कानों में गूंज उठी, इस ध्वनि को सुन ब्रह्मानन्द स्तब्ध हो गया और उसे पहचानने के लिये ध्यान से सुनने लगा फिर वही ध्वनि आई– **सावधा .....न !**

ब्रह्मानन्द ने महात्मा जी से सुना था कि स्वर्ग लोक में सब जा सकते हैं, किसी के लिये कोई रुकावट नहीं किन्तु यहां भी द्वारपाल की आवाज सुनकर स्तब्ध रह गया। उसे बार–बार यह विचार आने लगा कि कहीं यह किसी राजा का दरबार न हो। यदि ऐसा हुआ तो मेरे जैसे निर्बल दुखिया लोगों का गमन यहां कठिन है। राजाओं की सम्पत्ति और उनके मौखिक प्रतिष्ठित पद ऐश्वर्य शालियों के लिये ही निश्चित होते हैं, रिजर्व होते हैं। निर्धन–निर्बलों का रक्त चूस–चूस कर ही राजा और अमीरों के पेट मोटे हुआ करते हैं। किन्तु महात्मा जी ने तो स्वर्ग का स्थान बिना रोक–टोक के सबके रहने के लिये बतलाया था। सम्भव है यह द्वार सर्वदा बन्द ही रहता हो। यह विचार कर ब्रह्मानन्द ने पग दूसरे द्वार की ओर बढ़ाये किन्तु वहां भी यही ध्वनि कानों में पडी कि सावधा....न ! खबरदा.....र !!

इसी भाँति ब्रह्मानन्द तीसरे और चौथे द्वारों पर भी गया और यही ध्वनि कानों में पड़ती रही। पाँचवें द्वार पर जाकर वह खड़ा हो गया और मन ही मन में तुलसीदास जी की यह चौपाई पढ़ने लगा–

सकल पदार्थ हैं जग माहीं, कर्म हीन नर पावत नाँहीं।।

अब ब्रह्मानन्द निराश हो गया और भूले हुए मृग की भांति चारों ओर निहारने लगा। उत्तर की ओर देखा तो पूर्व की ओर मुख किये हुए मृग छाला पर आसन जमाकर बैठा हुआ एक महात्मा दिखाई दिया। ब्रह्मानन्द के मन में कुछ–कुछ धैर्य हुआ। इन महात्मा जी से यहां का पता ठीक मिल जायेगा। यह विचार कर वह महात्मा जी को श्रद्धा से नम्रता पूर्वक नमस्ते कर, उनके पास जा बैठा। उस दुखिया पुरुष को पास बैठा हुआ जानकर महात्मा जी की समाधि खुल गई। महात्मा जी के और ब्रह्मानन्द के जो प्रश्नोत्तर हुए वे निम्नलिखित हैं :–

महात्मा जी- तुम कौन हो और कहां से आये हो?

ब्रह्मानन्द- महाराज ! मेरा नाम ब्रह्मानन्द है और मैं भाव नगर से आया हूँ। मुझे ऐसा याद आता है कि कार्तिक सुदि अष्टमी को भाव नगर में स्वर्ग लोक की महिमा पर आपने व्याख्यान दिया था। क्या आपका शुभ नाम याज्ञवल्क्य महर्षि है?

महात्मा जी- हाँ मुझे याज्ञवल्क्य ही कहते हैं। मैं भाव नगर में गया था और उपदेश भी दिया था।

ब्रह्मानन्द– महाराज आपने कहा था कि स्वर्ग लोक में जाने वाला कोई नहीं रोका जाता। वहां संसार के सभी प्राणियों के लिये बिना शुल्क खुले रूप में जाने की आज्ञा है। किन्तु वहां तो पाँचों द्वारों पर डण्डा लिये द्वारपाल खड़े हैं। दूर से सावधान !! की ध्वनि कानों को बहरा किये देती है। कोई भी निर्धन अन्दर नहीं घुसने दिया जाता।

महात्मा जी– ठीक है। तुमने जिनकी ध्वनि सुनी वे स्वर्ग के पाँच द्वार रक्षक हैं। वे लोगों को अन्दर जाने से रोकने के लिए उद्घोष नहीं कर रहे अपितु उनके ये उद्घोष लोगों को सावधान करने के लिए हैं कि जो द्वारों को पार कर स्वर्ग में जाने का ढंग नहीं जानते। इन द्वार रक्षकों को अपने अनुकूल बनाकर ही मनुष्य स्वर्ग लोक में आनन्द से जा सकता है। इनका एक यह भी स्वभाव है कि ये मनुष्य को भुलाकर अपने पीछे लगा लेते हैं। इनके चकमे में आया हुआ मानव अपने ध्येय, स्वर्ग को ही नहीं अपने आपकों और अपनी वास्तविकता को भी भूल जाता है और इनके पीछे लगा हुआ संसार में ठोकरें खाया करता है। इसलिये इनको कोई–कोई लोग कभी–कभी असुर, राक्षस और शैतान के नाम से पुकारने लगते हैं। इन द्वार रक्षकों के नाम हैं :–

(१) आँख, (२) कान, (३) वाणी, (४) मन, और (५) प्राण।

मैं इन्हें एक–एक को बुलाकर तुम्हारे सामने करता हूँ। वे अपने विषय में तुम्हें स्वयं बतलावेंगे।

अरे यहां विद्याधर ब्रह्मचारी है?

विद्याधर– महाराज ! उपस्थित हूँ ! आज्ञा कीजिए !

महाराज जी– जाओ स्वर्ग लोक के प्रथम द्वरपाल आंख को बुला लाओ!

विद्याधर– महाराज बुला लाया। यह आंख उपस्थित है।

महात्मा जी– देवी आँख! यह तो किसी को भूला नहीं है कि तुम्हारें पीछे लगकर लोग बड़ी–बड़ी ठोकरें खाते हैं। दुनिया के मन मोहक रंग रूप दिखाकर तुम मनुष्य को मोह के बड़े भारी पाश में ऐसा फंसा देती हो कि तनिक फड़क भी नहीं सकता। यद्यपि वहां से उसे कुछ मिलता नहीं किन्तु अपने पास की पूंजी को भी वहीं नष्ट कर स्वयं भी नष्ट–भ्रष्ट हो जाता है। परन्तु चाहते हुए भी इस फंदे से उसका निकलना सरल नहीं होता। यह सब कुछ ठीक है किन्तु आज हम तुम से ही इस दुखिया–दीन के लिए यह पूछना चाहते हैं कि इस पाश से छूटने का उपाय क्या है?

आँख– महर्षि जी ! आप सब कुछ जानते हैं ! आपके सम्मुख कुछ कहना सूर्य को दीपक दिखाना है। किन्तु जिस भोले मनुष्य के लिए मुझे कहने के लिये आज्ञा दे रहे हैं, आपकी आज्ञानुसार उसे अपना कुछ वृत्तान्त सुना देना कर्त्तव्य समझती हूँ। यद्यपि मेरा यह कथन मेरे अपने लिये भीष्म का–सा उदाहरण प्रस्तुत करेगा किन्तु आपकी आज्ञा का पालन भी अत्यावश्यक है। मानव किसी वस्तु के वास्तविक स्वरूप को भूलकर ही भ्रम में पड़ता है। और उसका वह भ्रम उस वस्तु के वास्तविक स्वरूप को जानकर दूर हो जाता है। वस्तुतः मैं सारे संसार को प्रकाश और तेज प्रदान करने वाले सूर्य भगवान् की सुपुत्री हूँ, जो मनुष्य सूर्य भगवान् की विशेषताओं को देखकर मेरे साथ वैसा ही व्यवहार करने का यत्न करता है वह इस पाश से मुक्त हो जाता है। और उसके लिये स्वर्ग का द्वार हर समय खुला रहता है।

ब्रह्मानन्द– हे चक्षु देवी ! वे विशेषताएँ कौन–कौन सी हैं?

आँख– महाशय ! सबका वर्णन तो मैं नही कर सकती। इनमें से कुछ आपको सुना देती हूँ। सूर्य भगवान जब प्रातः ही उदय होते हैं, तो संसार के सब प्राणी प्रसन्न हो जाते हैं। यह सभी के लिये एक जैसा प्रकाश देते हैं और एक ही जैसा तेज। इन्हें किसी नीच और ऊँच का, धनाढ्य और दरिद्र का कोई विचार नहीं। भूमि की सभी वनस्पतियों को ये सभी के लिये उत्पन्न करते हैं। किसी एक के निमित्त नहीं। पृथ्वी पर पड़ी अशुद्ध से अशुद्ध वस्तु को ये सुखाकर शुद्ध करते हैं। ठीक इसी भांति जिस मनुष्य की आंखे संसार के सब प्राणियों को प्रेम की एक ही दृष्टि से देखती हैं, अपने द्वारा उपार्जित अन्न और धन को संसार के दीन–दुखियों में बाँटने के लिए अपने स्वामी आत्मा को दृढ़ कर देती हैं, संसार की निन्द्य वस्तुओं को देखकर भी उनसे अच्छा परिणाम निकालते हुए अपने लिये तथा दूसरों के लिये भी उन्हें लाभप्रद बनाने का प्रयत्न करती हैं, वहीं मनुष्य संसार के फन्दे से छूटकर स्वर्गलोक का भागी होता है।

ब्रह्मानन्द को इतना उपदेश देकर आँख ने अपना पथ पकड़ा।

महात्मा जी– विद्याधर ! जाओ बेटा स्वर्ग के दूसरे द्वार से कान को बुला लाओ।

विद्याधर– महाराज ! द्वार रक्षक कान उपस्थित है।

महात्मा जी– भाई कान तुम्हारे स्वभाव से सब मनुष्य परिचित हैं। तुम किस ढंग से प्राणियों को दुःखों में डाल देते हो यह किसी से भूला हुआ नहीं है। दुर्योधन और कर्ण की बातें तुम्हारे द्वारा सुनकर ही धृतराष्ट्र ने अपने वंश का नाश करा लिया और तड़प तड़प कर प्राण दिए। तुम्हारे इस प्रकार के कार्य सहस्त्रों प्रतिदिन होते रहते हैं, जिन्हें सुनाने की यहाँ अवश्यकता नहीं। आज हम तुम से केवल यह पूछना चाहते हैं कि तुम इन दुःखों से छुड़ाकर प्राणी को किस अवस्था में स्वर्ग लोक जाने की आज्ञा दे सकते हो?

कान – महाराज ! आप सब जानते हैं। मैं आपका दास हूँ। मैं ही नहीं सारी इन्द्रियाँ ही आपकी सेविकाएँ हैं। जो मनुष्य प्रकृति के नियम को आपकी भांति समझकर उस पर चलने का प्रयत्न करता है मैं उसका सेवक बन जाता हूँ और स्वर्ग का द्वार उसके लिये सर्वदा खुला रहता है। आप जैसे महर्षियों ने मेरी उपमा चन्द्र से दी है। चन्द्र के पास अपना प्रकाश नहीं, उसके पास जो कुछ प्रकाश है, वह सूर्य भगवान् से आया हुआ है। किन्तु वह सूर्य के आलोक को लेता हुआ भी उसकी ऊष्णता को जो कि लोगों को कष्ट प्रद है छोड़ देता है और उस आलोक (प्रकाश) को शीतल बनाकर संसार के लोगों को आनन्द प्रदान करता है। वनस्पतियों में अमृत की वर्षा करता है, जिन्हें कि खाकर संसार के प्राणी आनन्द से अपने जीवन का निर्वाह करते हैं। ठीक इसी तरह मेरे पास भी बुरे या भले विचार अपने कुछ भी नहीं होते। मुझे जो कुछ विचार मिलते हैं वे अग्नि देव की सुपुत्री वाणी से मिलते हैं। जो मनुष्य मेरी दशा चन्द्र जैसी बना लेता है अर्थात् वाणी से आये हुए अभद्र विचारों को छोड़कर मेरे द्वारा भद्र विचारों को ग्रहण करता है और ऐसे ही पवित्र विचारों का दुनियाँ में प्रचार करता है उसे इन बुरे विचारों से उत्पन्न होने वाले भीषण दुःख का सामुख्य नहीं करना पड़ता और उसके लिये स्वर्ग का द्वार हर समय खुला रहता है।

.......शेष अगले अंक में

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' पुस्तक छपकर तैयार

– लेखक स्व. पं. चमूपति एम. ए.

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' नामक पुस्तक पृष्ठ संख्या–256, अच्छे जिल्द एवं कागज में छपकर तैयार है। जिसकी कीमत 100/: रुपये है, जिस पर 25 प्रतिशत छूट उपलब्ध है। परन्तु भेजने में डाक व्यय खर्च होता है। अतः एक पुस्तक मंगाने के लिए डाक व्यय सहित 100/– रुपये भेजकर मंगा सकते हैं।

प्राप्ति स्थान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "महर्षि दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

दूरभाष :–011–23274771, 23260985

उसके पास वेदार्थ की कुंजी थी

डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

आज के युग में अगर कोई वेद मन्त्रों के बल पर यह सिद्ध कर दे कि वेद में रेल गाड़ी या हवाई जहाज के निर्माण की विधि का उल्लेख है तो वैदिक धर्मी बल्लियों उछल पड़ेंगे और चिल्लाते फिरेंगे कि देखो वेद कितने उच्च कोटि के ग्रन्थ हैं, उनमें रेल, तथा हवाई जहाज के निर्माण का वर्णन मिलता है। प्राचीन काल के वैदिक युग का ऋषि इस दृश्य को देखकर हस देगा और कहेगा कि कितने मूर्ख हैं ये लोग जो रेल और तार का नाम सुनकर अपनी बपौती को भूल जाते हैं क्या रखा है इन रेल, तार, हवाई जहाज में जिनके रोज एक्सीडेंट होते हैं और जिनमें असहाय बाल–बच्चे मौत के घाट उतरते हैं। वेद का ज्ञान इन भौतिक बातों के लिए नहीं दिया गया। ये मनुष्य के खिलौने हैं जो नित बनते बिगड़ते हैं। वेदों का ज्ञान उस आध्यात्मिक सत्य का उद्घाटन करने के लिए दिया गया है, जिसके लिए स्वयं वेद ने कहा है: ''पश्य देवस्य काव्यम् न ममार न जीर्यति'' – भगवान् के उस काव्य को देखो जो न कभी बुढ़ाता है, न क्षीण होता। वह अध्यात्म ज्ञान मानव के प्रयत्न से प्राप्त नहीं होता, वह भगवान् के देने से ही प्रसाद रूप में मिलता है। हम निरन्तर इस बात पर बल देते आ रहे हैं कि ईश्वरीय ज्ञान की कुंजी छिपी पड़ी है– उसे खोज करने की जरूरत है। जो खोजेंगे वे पायेंगे। वह खोज भौतिक न होकर आध्यात्मिक है। उपनिषदों की परिभाषा में जो कुछ हम दुनिया में टक्करें मार–मार कर पाते हैं और जिसे पाकर हम अपना जीवन धन्य मानते हैं, वह ''अविद्या'' है, और जिसे हम भूले हुए हैं, जिसकी तरफ हमारा ध्यान ही नहीं दिया जाता, वही वास्तव में ''विद्या'' है। अविद्या बेकार नहीं है, उससे मनुष्य मृत्यु को लांघ जाता है, दुनिया के अन्दर रहने लायक बना रहता है, परन्तु विद्या को पाकर वह मृत्यु को ही नहीं लांघता वह अमर हो जाता है। अमृत को प्राप्त करता है। वेद ज्ञान से उन्हें सनातन सत्य हाथ लगता है जो सदा टिकने वाला तथा स्थिर है। यह सत्य क्या है?

ऋग्वेद में सत्य ज्ञान के दो पक्षों का उल्लेख किया है– ''अद्वय'' तथा ''वर्धमान''। ''अद्वय'' वह ज्ञान है जिसमें दो पक्ष नहीं होते, ''वर्धमान'' वह ज्ञान है जिसमं दो पक्ष होते हैं, वह बढ़ता ही रहता है, उसमें परिवर्तन होता रहता है, बढ़ेगा तो परिवर्तन ही तो होगा। जितना ज्ञान है वह अगर सत्य है तो उसमें परिवर्तन नहीं हो सकता, परिवर्तन नहीं होगा तो वह वर्धमान भी नहीं होगा, बढ़ेगा नहीं, एक जगह टिके रहने से तालाब के जल की तरह सड़ने लगेगा। जो ज्ञान वर्धमान होगा, परिवर्तित होकर बढ़ता रहेगा वह बढ़ते–बढ़ते ऐसी स्थिति में पहुंच जायेगा जहां बढ़ना बन्द हो जायेगा और वहां स्थिर हो जायेगा, वहीं टिक जायेगा। इस दृष्टि से प्रत्येक वर्धमान ज्ञान ''अद्वय'' की तरफ आ रहा है। दूसरे शब्दों में हमें कहना होगा कि ''सत्य ज्ञान'' सदा ''अद्वय'' है। इसका अर्थ यह है कि ''सत्य'' सदा एक होता है, दो नहीं होता– इसीलिए इसे ''अद्वय'' कहते हैं– अर्थात् दो नहीं।

यहां यह स्पष्ट कर देना असंगत न होगा कि आधिभौतिक ज्ञान ''वर्धमान'' होता है, और आध्यात्मिक ज्ञान 'अद्वय'' होता है। उदाहरणार्थ, चिकित्सा शास्त्र में, जो आधिभौतिक है, कब्ज के लिए एक औषधि तजबीज की जाती है। संगत रोग को तो वह ठीक कर देता है, परन्तु उसके आफ्टर इफैक्ट होने लगते हैं जिस कारण चिकित्सा शास्त्र उस औषधि को छोड़ किसी अन्य औघधि को तजबीज करताहै। कुछ दिन बाद उसके भी दुष्परिणाम सामने आने लगते हैं। जब तीसरी दवा सुझाई जाती है। यह सिलसिला आगे–आगे बढ़ता जाता है इसे ''वर्धमान'' कहते हैं। भौतिक सत्य सदा वर्धमान है। आज यह, कल वह, परसों कुछ और भौतिकवाद में आगे–आगे का यह सिलसिला जारी रहता है। ''अद्वय'' में दो नहीं एक का सिद्धान्त काम करता है। यह आध्यात्मवाद की भौतिकवाद से भिन्नता तथा विशेषता है। अगर हम सत्य की खोज करना चाहते हैं, तो ''वर्धमान'' के मार्ग को जो भौतिक जगत् का है, छोड़कर ''अद्वय'' के मार्ग को, जो अध्यात्मिक जगत् का है पकड़ना होगा।

हमें ''वेद'' की ईश्वरीय ज्ञानता को जानने और सिद्ध करने के लिए यह नहीं जानना कि इसमें रेल, तार, मोटर आदि का जिक्र है या नहीं ये सब भौतिकवादी वस्तुएं हैं और ''वर्धमान'' हैं, आज हैं कल नहीं, वेद के ईश्वरीय ज्ञान होने के लिए हमें यह देखना होगा कि इसमें अपरिवर्तनीय, सत्य, अद्वय के तत्व हैं या नहीं। जो लोग ''वेद'' को भौतिकवाद की दृष्टि से देखते हैं वे इसमें भौतिक विज्ञानों को ढूंढने लगते हैं, जबकि ऋषि दयानन्द के हाथ में जिस कुंजी को श्री अरविन्द ने देखा था उसने वेदों के विषय में सारा दृष्टिकोण ही बदल दिया। वेदों में से भौतिकवादी रंग से रंगी हुई बातें ढूंढने के स्थान में ऋषि दयानन्द ने उन तत्वों को ढूंढना शुरू किया जो सत्य हैं, सनातन हैं, जिन्हें मनुष्य अपने ज्ञान से नहीं पा सकता, जिन्हें ईश्वर की तरफ से ही दिया जा सकता है। वे तत्व क्या हैं?

ईश्वर की सत्ता सबसे बड़ा तत्व जिसे मनुष्य नहीं खोज सकता, जो भगवान् की ही देन हो सकता है, वह स्वयं भगवान् का अस्तित्व है। वेदों ने स्पष्ट घोषणा की कि भगवान् एक है, उस एक को अनेक नामों से कहा गयाहै यह खुद वेद का कथन है– ''एकं सत् विप्राः बहुधा वदन्ति।'' पाश्चात्य विद्वान् यही समझते थे कि संसार की भिन्न–भिन्न शक्तियों को देखकर आदि मानव समझता होगा कि ये भिन्न–भिन्न शक्तियां स्वतन्त्र शक्तियां हैं इसलिए विकासवादी दृष्टिकोण से बहुदेवतावाद एक स्वाभाविक कल्पना थी। किसने आदिमानव को बतलाया कि असीम शक्ति वाली सत्ताएं अनेक नहीं, स्वतन्त्र नहीं, एक ही सत्ता हैं, उसी को भिन्न–भिन्न नामों से पुकारा जाता है। या तो आदिमानव ने यह परिणाम स्वयं निकाला, या यह सत्य उसे दिया गया। ऋषि दयानन्द के हाथों में जो वेदार्थ की कुंजी आ गई थी उसने बुद्धि के सब दरवाजे खोल दिये और वेदों के आधार पर ही ऋषि ने दो घोषणायें कीं, पहली घोषणा यह थी कि सृष्टि का रचयिता परमेश्वर है, और दूसरी घोषणा यह थी कि सृष्टि के रचयिता अनेक नहीं, एक ही है। यह सत्य मनुष्य द्वारा परीक्षणों से पाया नहीं जा सकता, भगवान द्वारा दिया जा सकता है।

आचार के नियम–आध्यात्मिक जीवन का आधारभूत सत्य एकेश्वर की सत्ता को स्वीकार करना है जो वेदों में प्रतिपादित हैं। इसके अतिरिक्त जीवन के ऐसे नियम हैं जिन्हें अपने अनुभव के आधार पर निर्मित नहीं किया जा सकता, परन्तु जो विश्वभर में एक से व्यवहृत होते हैं। उदाहरणार्थ, अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य तथा अपरिग्रह ये ऐसे चारित्रिक नियम हैं जो मनुष्य व्यवहार में तभी ला सकता है जब उसे इस प्रकार का जीवन बिताने की कहीं से प्रेरणा मिले। ''अहिंसा'' को ही लीजिए। मार–धाड़ कौन नहीं करता। यह मार–धाड़ सृष्टि के शुरू से चली आ रही है जो मनुष्य के स्वभाव में ओत–प्रोत है। परन्तु सृष्टि के आदि–काल से ही वेद ने मानव को ''अहिंसा'' का उपदेश दिया है। इसी तरह ''सत्य को लीजिए। वेद का कथन है कि सृष्टि की उत्पत्ति ही ''सत्य'' से हुई है सृष्टि की स्थिति भी सत्य के आधार पर है। वेद में जीवन के मूल में जो नियम काम कर रहे हैं उनका विशद वर्णन किया है। ये सत्य संसार के सब धर्मों तथा सब देशों में मूलभूत तत्वों के रूप में एक समान विद्यमान हैं। सब जगह ये आध्यात्मिक सूत्र कैसे गये और कहां से फैले? अगर ये भिन्न–भिन्न देशवासियों ने स्वयं, अपने–आप इनका निर्माण किया हो तो ये बिल्कुल एक समान क्यों हैं। उनकी एक समानता से ज्ञान होता है कि इन तत्वों का उद्भव–स्थल भी एक ही है। इतना ही नहीं कि इनका रूप एक–सा है, परन्तु सब धर्मों तथा देशोंमें इन सत्यों को नित्य, अपरिवर्तनीय तथा ''अद्वय''– इसका विकल्प और कुछ नहीं यह भी माना जाता है। ये आध्यात्मिक तत्व ऐसे हैं जिनका कोई विकल्प नहीं है, सृष्टि के आदि में ही ऐसे नित्य तथा सत्य नियमों को अगर हम कहीं पाते हैं तो वेद में।

हमने जो कुछ लिखा उसका थोड़े शब्दों में भाव क्या है। हमारे कथन का अभिप्राय यह है कि भारत वह देश है जिसे वेद जैसे आध्यात्मिक ग्रन्थ के प्राप्त होने का गौरव मिला है। वेद के विषय में भारत की आस्था रही है कि इसमें जीवन के रहस्य निहित हैं। चिरकाल से वेदों के ज्ञान का लोप रहा था फिर भी इसका अर्थ न जानते हुए इनकी रक्षा की गयी। देश में अनेक राज्य आये, चले गये, परन्तु वेदार्थ न जानते हुए भी ब्राह्मणों ने इनकी रक्षा की। जब–जब इस खजानें को खोलने की कोशिश, की गयी, जनता वेदार्थ न जानने के कारण पथ भ्रष्ट हो गयी। अन्त में ऐसा भी समय आया जब वेदों के बन्द ताले की कुंजी ऋषि दयानन्द के हाथ लगी। 'दयानन्द युग' आते ही यह सर्व–विदित हो गया कि इस बन्द सन्दूक में वह अमृत भरा है जिससे हमारा देश संसार भर का मार्गदर्शन कर सकता है। आज यह समय आ गया है, और देखना है कि कौन वेद के आधार पर विश्व का पथ प्रदर्शन करता है। वेद का स्वयं कहना है कि अब छिपाकर रखी हुई निधि की चाबी मिल गई है, ताले में बन्द खजाना सामने आ पड़ा है, अब इसे लेकर देश–विदेश में बखेर दो– ''कृण्वन्तो विश्वमार्यम्''।

देव दयानन्द बनो

– पं. नन्दलाल निर्भय सिद्धान्ताचार्य पत्रकार

भारत के नर–नारी जागो! वैदिक धर्म निभाओ, भारत की शान बढ़ाओ।
कहने का अब समय नहीं है, करके काम दिखाओ, भारत की शान बढ़ाओ।
किसी समय यह देश हमारा, दुनिया का था स्वामी।
विद्या बल में, रण कौशल में, था जगती में नामी।।
पढ़ो सभी इतिहास पुराना, व्यर्थ न समय गंवओ, भारत की शान बढ़ाओ।
कहने का अब समय नहीं है, करके काम दिखाओ, भारत की शान बढ़ाओ।
राम, भरत, लक्ष्मण जैसे थे, भारत में बलधारी।
गौतम, कपिल, कणाद, जैमिनी थे वैदिक पुजारी।।
योगीराज कृष्ण, अर्जुन की, जग को याद दिलाओ, भारत की शान बढ़ाओ।
कहने का अब समय नहीं है, करके काम दिखाओ, भारत की शान बढ़ाओ।
सावित्री, सीता, कुन्ती सी थीं भारत में माता।
सती देवकी जीजाबाई सी थीं भाग्य विधाता।।
याद करो पन्ना दाई को, जीवन सफल बनाओ, भारत की शान बढ़ाओ।
कहने का अब समय नहीं है, करके काम दिखाओ, भारत की शान बढ़ाओ।
ऋषियों के प्यारे भारत में, गउएँ जातीं मारी।
दिन पर दिन बढ़ते जाते हैं, जालिम अत्याचारी।।
बन जाओ प्रताप शिवा, दुष्टों को मार गिराओ, भारत की शान बढ़ाओ।
कहने का अब समय नहीं है, करके काम दिखाओ, भारत की शान बढ़ाओ।
नेता बेईमान रात–दिन करते हैं घोटाले।
आस्तीन में छुपकर बैठे, नाग पोनिया काले।।
बिस्मिल शेखर बनो, पापियों के तुम शीश उड़ाओ, भारत की शान बढ़ाओ।
कहने का अब समय नहीं है, करके काम दिखाओ, भारत की शान बढ़ाओ।
नित्य लूटते हैं अब गुण्डे, ललनाओं की असमत।
देश भक्त विद्वानों की होती है यहाँ फजीहत।।
मानवता के हत्यारों को, भारी सज़ा दिलाओ, भारत की शान बढ़ाओ।
कहने का अब समय नहीं है, करके काम दिखाओ, भारत की शान बढ़ाओ।
घूम रहे हैं आर्यावर्त में, अब लाखों पाखण्डी।
भंगड सुल्फेबाजों की, खुल गई देश में मण्डी।।
देव दयानन्द बनो, वेद प्रचार करो, यश पाओ, भारत की शान बढ़ाओ।
कहने का अब समय नहीं है, करके काम दिखाओ, भारत की शान बढ़ाओ।
युवक–युवतियों को फैशन की है घातक बीमारी।
मदिरा पीते नित्य अनाड़ी, जालिम मांसाहारी।।
अपना प्यारा देश बचाओ, भारत के योद्धाओं, भारत की शान बढ़ाओ।
कहने का अब समय नहीं है, करके काम दिखाओ, भारत की शान बढ़ाओ।
उग्रवाद, आतंकवाद का भारी जोर यहाँ है।
देशद्रोही गद्दारों का भारी शोर यहाँ है।।
कर दो ठीक मिजाज खलों के वीरों मत दहलाओ, भारत की शान बढ़ाओ।
कहने का अब समय नहीं है, करके काम दिखाओ, भारत की शान बढ़ाओ।
भारत की प्यारी ललनाओं! अब तो निद्रा त्यागो।
दुर्गा लक्ष्मी बनो देवियों! किरणमई बन जागो।।
नन्दलाल निर्भय दुनियां में नाम अमर कर जाओ, भारत की शान बढ़ाओ।
कहने का अब समय नहीं है, करके काम दिखाओ, भारत की शान बढ़ाओ।

आर्य सदन बहीन, जिला–पलवल (हरियाणा)
मो.:–0–9813845774

पृष्ठ–1 का शेष

आर्य समाज दक्षिण अफ्रीका का 110वाँ तथा आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका का 90वाँ वार्षिकोत्सव

कराया जायेगा जहाँ सूखा पड़ा है और ग्रामीण लोगों को पानी नहीं मिल पा रहा है। उनकी इस घोषणा का उपस्थित लोगों ने तालियों की गड़गड़ाहट से स्वागत एवं समर्थन किया। इस अवसर पर सभा के प्रधान डॉ. बिसराम रामविलास ने कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी प्रस्तुत करते हुए आर्य समाज के 110 वर्ष के इतिहास पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि कैसे उनके पूर्वजों ने आर्य समाज का यह पौधा लगाया जो आज बट वृक्ष बनकर दक्षिण अफ्रीका के लोगों की सेवा के लिए कृत संकल्प है।

14 फरवरी को प्रातः 9 बजे से एग्जीबिशन सेन्टर में बहुकुंडीय यज्ञ का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर यज्ञ से पूर्व स्वामी आर्यवेश जी के नेतृत्व में आर्य समाज दक्षिण अफ्रीका के पदाधिकारियों, विभिन्न देशों से पधारे प्रतिनिधियों तथा पंडित एवं पंडिताओं को एक भव्य जुलूस के रूप में यज्ञ मण्डप में लाया गया और यज्ञ का कार्यक्रम बेहद प्रभावशाली ढंग से सम्पन्न किया गया। यज्ञ का संचालन स्वयं डॉ. बिसराम रामविलास जी ने किया तथा नैरोबी से पधारे श्री मवांगी शास्त्री ने वेद पाठ में उनका साथ दिया।

यज्ञ के उपरान्त स्वामी आर्यवेश जी ने अपने प्रवचन में बताया कि आर्य समाज कोई धार्मिक संस्था नहीं है अपितु आध्यात्मिक विचारों पर आधारित एक आन्दोलन है। स्वामी जी ने यज्ञ की विद्वतापूर्ण व्याख्या करते हुए कहा कि परोपकार का नाम यज्ञ है, अतः प्रत्येक आर्य को परोपकारी होना चाहिए। उन्होंने कहा कि जिस समय हम परोपकार की भावना से बिना किसी रंगभेद, लिंगभेद व बिना किसी अन्य भेदभाव के कार्य करेंगे तो कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का लक्ष्य निश्चित रूप से पूर्ण होगा। इस अवसर पर आर्य समाज दक्षिण अफ्रीका के प्रधान श्री बिसराम रामविलास ने पारम्परिक दक्षिण अफ्रीका के लोगों तथा हिन्दू विचारधारा के लोगों के संतुलित विकास विषय पर अपने विचार रखे। उन्होंने कहा कि हिन्दू समाज वेद को मानता है जो दुनिया की सबसे पुरानी पुस्तक है तथा अफ्रीकी लोगों के रहन–सहन, धार्मिक मान्यताओं, पूजा–पाठ तथा अन्य संस्कारों में बहुत समानता है। दोनों ही प्रकृति पर विश्वास रखते हैं। उन्होंने कहा कि हमारे पास एक विकल्प है या तो हम घृणा व आपसी नफरत फैलाने वाली विचारधारा से जुड़ें अथवा वैदिक विचारधारा के अनुसार दोनों संस्कृतियों में प्यार, प्रेम व सहयोग की भावना को आगे बढ़ाकर मानवता की सेवा करें।

इस पूरे कार्यक्रम में कई लघु पुस्तकों का भी विमोचन किया गया और गीत, भजन व कत्थक नृत्य आदि के सांस्कृतिक कार्यक्रम भी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के कलाकारों द्वारा प्रस्तुत किये गये। इस अवसर पर 'तृप्ति' प्रोजेक्ट के लिए लगभग 2 लाख 20 हजार रेन्ड (लगभग 10 लाख रुपये) के सहयोग का आश्वासन भी विभिन्न देशों से पधारे प्रतिनिधियों तथा दक्षिण अफ्रीका की कई संस्थाओं ने घोषित किया। कार्यक्रम बेहद प्रभावशाली एवं उत्साहपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सभी विशिष्ट अतिथियों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

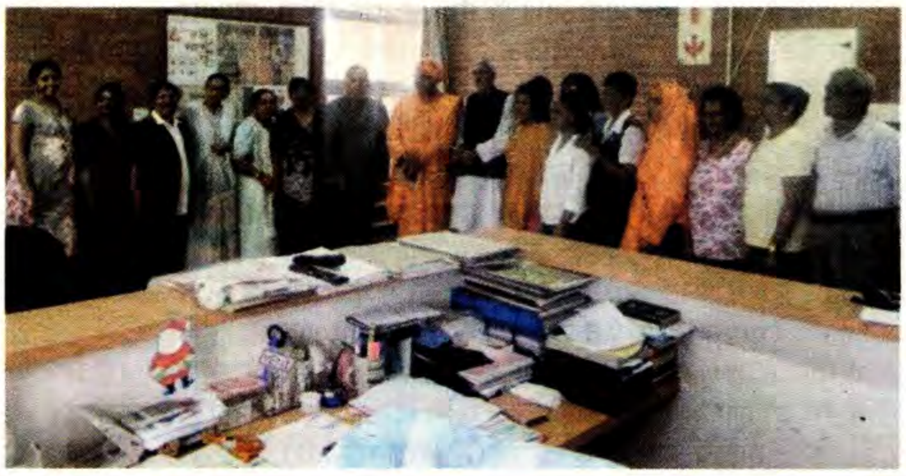

इस कार्यक्रम के पश्चात् सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी एवं अन्तरंग सदस्य आचार्य सन्तराम आर्य जी 19 फरवरी, 2016 तक दक्षिण अफ्रीका के विभिन्न आर्य समाजों में आयोजित कार्यक्रमों में गये जिसमें पिटर मैरिसपर्ग, वेरलक तथा हिन्दू महासभा प्रमुख हैं। स्वामी जी ने आचार्य सन्तराम जी के साथ आर्यन वेनेवेलेन्ट होम, गाँधी सेटेलमेंट एवं डरबन में अन्य विशेष स्थानों का भी भ्रमण किया।

प्रो. रासासिंह "कर्मवीर आर्य श्रेष्ठ" उपाधि से सम्मानित

26 फरवरी, अजमेर। अलवर में महर्षि दयानन्द की विचारधारा के अनुरूप 'वैदिक विद्या मन्दिर' तथा आर्य कन्या विद्यालय समिति के संरक्षक तथा अनेक शिक्षण संस्थाओं के उन्नायक, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के पूर्व प्रधान एवं राजस्थान के सुप्रसिद्ध ख्यातिप्राप्त नेता एवं स्वाधीनता सेनानी की स्मृति में गठित स्व. छोटूसिंह आर्य शारदा चेरीटेबल ट्रस्ट द्वारा उनकी नवम् पुण्यतिथि पर मंगलवार दिनांक 23 फरवरी 2016 को आर्य समाज अलवर में आयोजित श्रद्धांजलि समारोह में "षष्टम सम्मान समारोह" में आर्यसमाज अजमेर के प्रधान, कर्मठ आर्यवीर, वैदिक विद्वान, प्रखरवक्ता एवं समाजसेवी तथा पांच बार विजयी रहकर अजमेर संसदीय क्षेत्र से लोकसभा के सदस्य निर्वाचित होने वाले पूर्व सांसद प्रो. रासासिंह रावत को "कर्मवीर आर्य श्रेष्ठ" की उपाधि से सम्मानित करते हुए उन्हें अभिनन्दन पत्र तथा 11000/– (ग्यारह हजार रूपये) तथा शाल एवं ओ३म पट्टिका धारण करवा मानव कल्याण की कामना से ऋचाओं का पाठ करते हुए गौरवान्वित किया गया।

इस ट्रस्ट द्वारा अब तक यह सम्मान पूर्व में स्वामी सुमेधानन्द सीकर, कैप्टन देवरत्न आर्य, डॉ. भवानीलाल जी भारतीय, प्रो. धर्मवीर आर्य, मंत्री परोपकारिणी सभा अजमेर एवं श्री अशोक आर्य कार्यकारी अध्यक्ष श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास उदयपुर को प्राप्त हो चुका है।

75 वर्षीय प्रो. रासासिंह को यह सम्मान उनके द्वारा आर्य समाज अजमेर, दयानन्द बाल सदन (अनाथ आश्रम), आर्य शिक्षण संस्थाओं के कई वर्षों तक क्रमशः अवैतनिक चेयरमेन, अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष आदि के रूप में सेवा देने, अपने गुरू दत्तात्रेय वाब्ले के प्रति सच्ची निष्ठा रखते हुए हिन्दी रक्षा आन्दोलन में पौने दो माह जेल काटना, सती विरोधी दिवराला पद यात्रा में सक्रिय भागीदारी, आर्य संस्थाओं के निरन्तर विकास, डी.ए.वी. के सफल प्रधानाचार्य के रूप में उत्तम परीक्षा परिणाम एवं अनेक उपलब्धियों के फलस्वरूप 1989 में राजस्थान सरकार द्वारा सम्मानित होने, आर्यसमाज स्थापना शताब्दी तथा महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी के अवसर पर एक आर्यवीर और नेता के रूप में भरपूर सहयोग देना, पांच बार बेदाग छवि एवं ईमानदार रहते हुए लगातार अजमेर संसदीय क्षेत्र से सांसद चुने जाने तथा संवेदनशील, सेवाभावी एवं मानवीय मूल्यों के पालक, निश्छल एवं सच्चरित्र व्यक्ति, आर्यवीर दल राजस्थान के संरक्षक, आर्य महासम्मेलनों शताब्दी अवसरों, उत्सवों आदि में एक प्रभावी विद्वान के रूप में भाग लेने आदि के उपलक्ष्य में दी गई सेवाओं के रूप में प्रदान किया गया।

इस अवसर पर आर्य समाज अलवर, आर्य शिक्षण संस्थाओं, अलवर के माननीय पदाधिकारीगण, जिले के आर्य नेतागण तथा सैकडों स्त्री–पुरूष उपस्थित थे।

अन्त में प्रो. रासासिंह रावत ने स्व. माननीय छोटूसिंह जैसे ख्यातिप्राप्त नेता के महान् कार्यों का उल्लेख कर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि दी। आर्यजनों से उनके मिशन को आगे बढ़ाने का आह्वान किया तथा प्रो. रावत ने अपने इस सम्मान, सत्कार और अभिनन्दन के लिये स्वाधीनता सेनानी छोटूसिंह आर्य चेरीटेबल ट्रस्ट, आर्य समाज अलवर के प्रधान अशोक आर्य, प्रदीप आर्य, अमरमुनि, जगदीश प्रसाद शर्मा एवं समस्त महानुभावों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया।

इससे पूर्व प्रारम्भ में वृहद् यज्ञ एवं ईश वन्दना सम्पन्न हुई। अन्त में जयघोषों के बाद शान्तिपाठ के साथ कार्य सम्पन्न हुआ।

– कल्याण सिंह आर्य
प्रेस प्रवक्ता
313, चांदबावड़ी, अजमेर (राज.)
मो.–9413301684

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के नेतृत्व में हरियाणा में शांति व भाईचारा कायम करने के उद्देश्य से

रोहतक के बाजारों में निकाली गई "सामाजिक सौहार्द यात्रा"

आर्य समाज के कार्यकर्ताओं गुरुकुलों के ब्रह्मचारियों तथा गणमान्य व्यक्तियों ने लिया भारी संख्या में भाग

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनधि सभा नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने जाट आरक्षण आंदोलन के दौरान हुई जान माल की हानि एवं समाज में व्याप्त तनाव की स्थिति को शांति एवं सौहार्दपूर्ण बनाने की अपील की है। शुक्रवार को उन्होंने शहर के बाजारों में आर्य समाज के सदस्यों तथा भारी संख्यां में उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों के साथ सामाजिक सौहार्द स्थापित करने के उद्देश्य के लिए सद्भावना यात्रा निकाली। उनके साथ आर्य समाज के सैकड़ों कार्यकर्ता एवं गुरुकुलों के ब्रह्मचारी शामिल रहे। यह यात्रा समाज में सदियों से चले आ रहे परस्पर भाईचारे को बनाए रखने के उद्देश्य के साथ मौन रहकर निकाली गई। यात्रा पुराना बस स्टैंड से प्रारंभ हुई थी। इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने आंदोलन के दौरान हुए जान माल के नुकसान पर गहरा दुख प्रकट किया। उन्होंने कहा कि दुःख एवं क्षोभ की घड़ी में शांतिपूर्ण तरीके से सामाजिक सौहार्द लौटाने की अति आवश्यकता है। हरियाणा की प्राचीन संस्कृति रही है, भाईचारा, सामाजिक सौहार्द, सद्भावना व सहयोग। लेकिन किन्हीं कारणों से समाज का ताना बाना कमजोर हो रहा है तथा कुछ स्वार्थी एवं विघटनकारी तत्व इस स्थिति का लाभ उठाकर अपनी राजनीतिक रोटियाँ सेंकना चाहते हैं। स्वामी आर्यवेश जी ने बताया कि आर्य समाज का शुरुआत से ही समतामूलक समाज एवं सामाजिक सौहार्द स्थापित करने का प्रयास रहा है। आर्य समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानंद जी ने कहा कि जब तक देश में अनिवार्य समान व निःशुल्क शिक्षा लागू नहीं होगी, जब तक कृष्ण और सुदामा की भांति गरीब और अमीर के बच्चों को शिक्षा में समान अवसर नहीं दिए जाएंगे तब तक समस्या का समाधान संभव नही है। किंतु इस दिशा में देश की किसी भी राजनीतिक पार्टी की इच्छा शक्ति दिखाई नहीं देती। ऐसी स्थिति में समझदार लोगों को गंभीरता के साथ सामाजिक सौहार्द स्थापित करने के लिए आगे आना चाहिए। 36 बिरादरी के लोगों को ऐसे सामाजिक तत्वों को बेनकाब करना चाहिए। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि सभी प्रभावित जिलों में सामाजिक सौहार्द यात्रा निकाल कर समाज के प्रबुद्ध लोगों को प्रेरित करेंगे कि वे आगे बढ़कर परस्पर भाईचारा बनाये रखने के लिये संगठित होकर कार्य करें ताकि पूरे हरियाणा का वातावरण पुनः सामान्य व शांति की और लौटे और 36 बिरादरी का प्यार, भाईचारा व सौहार्द निरंतर कायम रहे। आज की यात्रा में गुरुकुल लाढ़ौत के संचालक आचार्य हरिदत्त उपाध्याय, गुरुकुल सिंहपुरा के मंत्री वेद प्रकाश आर्य, बेटी बचाओ अभियान की प्रधान पूनम आर्या, प्रवेश आर्या, आचार्य संतराम, दीक्षेन्द्र आर्य प्रधान सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा, डॉ. जगदीश, राजबीर वशिष्ठ, दयावती आर्या, वैद्य रमेश, धर्मेन्द्र, रविन्द्र, महिपाल सिंह, गजनूप सिंह, शंभू शास्त्री, माता बीरमति आर्या, सुनीता आर्या, महाबीर शास्त्री, मोनू आर्य, जसवंत आर्य, रीमा आर्या, किरण आर्या, राजकुमारी आर्या सहित विभिन्न आर्य समाजों के अधिकारी भी शामिल रहे। गुरुकुल लाढ़ौत, गुरुकुल सिंहपुरा व स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ के सैकड़ों ब्रह्मचारियों तथा छात्रों ने भी इस यात्रा में भाग लिया।

स्वामी आर्यवेश जी ने शुक्रवार को सदभावना यात्रा के बाद पत्रकारों से बातचीत करते हुए कहा कि हरियाणा प्रदेश आपसी भाईचारे व शांति का प्रतीक रहा है। पूर्व काल में भी हरियाणावासियों के अंदर परस्पर सहयोग की भावना रही है। उन्होंने 36 बिरादरी के प्रबुद्ध लोगों से पूरे वातावरण को पहले जैसा बनाने के लिए सहयोग करने की अपील की। उन्होंने पूरे घटनाक्रम में जाट नेताओं का भी आह्वान किया है कि वह आगे आएं और माहौल में शांति व भाईचारे को दुबारा कायम करने का प्रयास करें। उन्होंने कहा कि आगजनी व लूटपाट की घटनाओं के लिए एक बिरादरी को जिम्मेदार ठहराना गलत है, क्योंकि इस घटना में एक बिरादरी नहीं, बल्कि कुछ असामाजिक तत्व भी शामिल हुए थे। इससे पहले भी किसान आंदोलन, इंदिरा गांधी की हत्या व अन्य आंदोलनों में भी असामाजिक तत्वों ने घुसकर हिंसक घटनाओं को अंजाम दिया और उसका खामियाजा निर्दोष जनता को भुगतना पड़ा था। आज भी कुछ असामाजिक तत्वों के कारण समाज में जातिवाद का जहर घुल रहा है। प्रदेश की शांति व भाईचारे को ठेस पहुंची है। उन्होंने कहा कि समाज के लोग एक–दूसरे पर निर्भर करते हैं, लेकिन कुछ लोगों ने राजनीतिक बयानबाजी कर माहौल को खराब करने का काम किया। उन्होंने कहा कि वह देश से बाहर गए हुए थे, जिसके कारण उन्हें इस घटना के बारे में जानकारी नहीं थी। बीस फरवरी को वह दिल्ली पहुंचे थे, जहां उन्हें पूरे घटनाक्रम के बारे में जानकारी मिली। वह उसी समय अपने कुछ संतों के साथ सड़क पर उतरना चाहते थे, ताकि उपद्रवियों को रोका जा सके, लेकिन वह रोहतक में नहीं पहुंच सके। पूरे घटनाक्रम में किसी भी वर्ग का व्यक्ति शामिल हो सकता है ऐसे लोगों को सामने लाया जाए। अपने हक के लिए सभी आंदोलन करते है लेकिन शांतिपूर्ण ढंग से। लेकिन जब आंदोलन हुआ तो वह गलत हाथों में चला गया। हरियाणा शुरू से ही 36 बिरादरी का प्रदेश रहा है, जबकि सेंसर में तो 3078 जातियाँ एक साथ चलती है। उन्होंने पूरे घटनाक्रम की निष्पक्ष व सी.बी.आई. से जांच करवाने की माँग की। उन्होंने कहा कि कुछ लोगों की निगाह पहले से ही उपद्रव मचाने की थी, जिन्हें इस दौरान मौका मिला और गन हाऊस को लूटकर माहौल को खराब किया गया। आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानंद ने कहा था कि सभी को समान व निःशुल्क शिक्षा मिलनी चाहिए। जब एक प्रधानमंत्री और एक गरीब का बच्चा साथ पढ़ाई करेगा तो आरक्षण की जरूरत ही नहीं रहेगी और इस सिस्टम को लागू करने की आज बहुत जरूरत है। सरकार को शिक्षा प्रणाली पर गंभीरता से विचार करना होगा और स्थाई हल निकालना होगा।

यस्यच्छायाऽमृतम्

विद्यावाचस्पतिः श्री रामदत्त शास्त्री
पक्की सराय, अनूपशहर, बुलन्दशहरम् (उ. प्र.)

वैदिकवाङ्मयं हि नाम मानव मात्रस्य कृते सुखशान्तिसमृद्धिपरिपोषकं पुष्टिवर्धनं मनोविकारापहारि सद्विचारसार समुत्पादनपरं शश्वदात्माभ्युदयकारि जीवनज्योतिरादीप्तिकरम्। वैदिकवाङ्मयतरुर्हि नितरामच्छितो विततोऽहर्निशघनच्छाया प्रदायी मधुरफलवान्, समभ्युपेतपरिश्रात्तजनमानस शंकरोऽविरतविततत्तापपापहारी जगज्जीवातुरूपः। साम्प्रतम् अस्मद्देशे नवयूनां नवयुवतीनां च करेषु नापतति शमं शान्तिप्रदं सून्नतविचारवर्धकं तादृशं मङ्लमयं स्वस्थं सत्साहित्यम्, सदधीत्यनवतरुणा नवतरुण्यश्च्चाविरतं कलुषितविचारधारानिमग्नाः सततं श्रृंङ्गारभावजागरूकाः कामयमाना अपि सत्पथाध्वनीना न भवन्ति, प्रत्युत कलुषितभावभरितसाहित्या धीतितत्परास्तथाविधाऽविरतचलचित्रजगदर्शन संदीप्तकामवासनाऽनलास्तथा विधेष्वेवानिशं विचारेषु ब्रुडित मानसा न कथमपि जीवनाभ्युदयाध्वानं लभन्ते।

सत्यस्य पन्था वितो देवयानः

अयि भारतीया भ्रातरः! यदि यूयं वास्तविकं तथ्यं सुखमासदयितुं कामयध्वे तर्हि त्वरया विहाय विविधान् अवद्यानध्वनः कल्मषान्, भूयो वैदिकमार्गानुररीकुरुत। स एव सारभूतः सत्यो देवयानो महान् पन्था।ः इन्द्रियाणां दमनेन साधुना चेतसा चिन्तयत जन्ममरणापवर्गाय जीवनवैशद्याय वैदिकसंस्कृतिसम्पदम् अविरामोन्नतिपरां कापटिकजनजालनिर्मलगुर्वीम्। एष एव मार्गः सच्चिदानन्दस्वरूपस्य प्रभोः सम्मेलनाय सांसारिक कष्टकलापापहाराय परमशान्तेरुपलब्ध्ये च।

पश्य देवस्य काव्यं न ममार न जीर्यति

भगवती श्रुतिः स्वयं वैदिकसाहित्यस्य संस्तवं कुरुते। ऋग्यजुस्सामाथर्वरूपं देवस्य परमात्मनः काव्यं कवित्वरूपं सार्वकालिकम्, यत्कदापि न जीर्णं भवित, न च म्रियते। एतत्काव्याध्ययनाध्यापनाभ्यामेव परमां शाश्वतिकी च शांति यूयं यास्यथ। अयमेव सुखावहो दुःखापहाश्च मार्गः

नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय

भगवदाराधनं हि जीवनस्य परमं महत्त्वम्। यदि जगति विविधानि अनीकानि विजित्य विविधान् अरीन् संमर्द्य, धन-धान्य विविधालङ्कारसम्भारभूतिं भव्यभावनायोगान् आसाद्य प्रचुरां मेदिनीं च विजित्य तादृशमानन्दम् उपलब्धासि सर्वमिदं क्षणिकं विनाशि च सुखम्। यद्येषु तथ्यं सुखमभविष्यत् तर्हि कथं धनधान्य पूर्णजीवनाः जना आरण्यकाः संजाताः। सकलान् सांसारिकरागान् सांसारिक जनदृष्टौ सुखागारान् विहाय कथ मुनित्वमापन्नाः। कथं जनकादयो राजर्षयः स्वीयां समृद्धां राज्यसमृद्धिं परिहाय विपिनवासिनोऽभूवन्। 'नाल्पे सुखमस्तिं भूम्नि सुखम्।' यो वै भूमा तत् सुखम्।' 'भूमा वै परमैश्वरः।

यजुंषि प्रतिपादितम्

— भारतोदय से साभार

माता–पिता के सान्निध्य में मुस्लिम युवती की शुद्धि एवं हिन्दू युवक से विवाह सम्पन्न

इन्दौर : आर्य समाज मंदिर संचार नगर, इन्दौर, म. प्र. में सुश्री अन्नू खान का शुद्धि संस्कार के पश्चात् सुश्री मुस्कान आर्या नाम रखा गया, इसके पश्चात् श्रीप भारत यादव के साथ आचार्य भानु प्रताप वेदालंकार के आचार्यत्व में वैदिक विवाह संस्कार सम्पन्न हुआ। इस शुद्धि संस्कार एवं विवाह संस्कार में कन्यादान (कन्या प्रतिग्रहण) श्री आसिफ खान एवं श्रीमती सोना खान के सान्निध्य में हुआ।

आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार ने बताया कि सुश्री मुस्कान एवं भारत का रिश्ता भी आर्य समाज संचार नगर के माध्यम से निश्चित हुआ था। श्री आसिफ खान की आस्था तो मुस्लिम धर्म में है किन्तु उनकी श्रीमती सोना खान की आस्था हिन्दू धर्म में है। अतः सभी पुत्रियों का विवाह हिन्दू समाज में करने का निश्चय किया। इस अवसर पर आर्य समाज के समस्त अधिकारियों ने बधाई दी।

श्री ओम प्रकाश देवड़ा ने बताया कि ऐसे अनेकों आदर्श रिश्तों का सम्बन्ध "वैदिक परिणय सामाजिक सेवा संस्थान" द्वारा सर्वजातीय परिचय सम्मेलनों, सर्व जातीय परिणय स्मारिका के माध्यम से किया जाता है।

— श्री ओम प्रकाश देवड़ा, मो.:—9977987777, 9977967777

अर्धकुम्भ मेला 2016 के अवसर पर
सार्वदेशिक सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड एवं वैदिक विरक्त मण्डल के तत्वावधान में
विशाल वेद प्रचार शिविर का आयोजन एवं पारवण्ड–खण्डिनी पताका का आरोहण
20 मार्च से 13 अप्रैल, 2016 तक

पूर्व वर्षों की भांति अर्धकुम्भ मेला हरिद्वार में जनवरी, 2016 से प्रारम्भ होगा। इस अवसर पर विभिन्न मठ, मंदिर एवं धार्मिक, सामाजिक संस्थाओं के पंडाल सजेंगे। अत: सार्वदेशिक सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड एवं वैदिक विरक्त मण्डल की संयुक्त बैठक में यह निश्चय किया गया है कि 20 मार्च से 13 अप्रैल, 2016 तक इस अवसर पर हरिद्वार मे आने वाली धर्म पारायण जनता को धर्म के सच्चे स्वरूप से अवगत कराने के लिए एवं नशाखोरी, कन्या भ्रूण हत्या, मांसाहार एवं धार्मिक अन्धविश्वास जैसी कुरीतियों से दूर रहने का संकल्प दिलाने के लिए तथा वेद प्रचार के माध्यम से ईश्वर भक्ति का सच्चा स्वरूप समझाने के लिए एक विशाल वेद प्रचार शिविर का आयोजन किया जायेगा। शिविर में चतुर्वेद पारायण यज्ञ, विभिन्न समस्याओं से सम्बन्धित सम्मेलन योग साधना शिविर तथा नशाखोरी, कन्या भ्रूण हत्या, जैसी सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध जन-चेतना रैली आयोजित की जायेगी। इस अवसर पर जहाँ आर्य जगत के उच्चकोटि के विद्वान, भजनोपदेशक एवं कार्यकर्ता जनता का मार्ग दर्शन करेंगे वहीं देश के कोने-कोने से आर्यजन अपनी-अपनी समाजों के बैनर लेकर शिविर में भाग लेंगे।

इस अवसर पर महर्षि दयानन्द की परम्परा को जीवित रखते हुए पाखण्ड खण्डिनी पताका का आरोहण भी किया जायेगा जो मेले में विशेष आकर्षण का कार्य करेगी। आप सभी से निवेदन है कि अभी से मेले में आने का मन बना लें तथा इस महत्त्वपूर्ण आयोजन को सफल बनाने के लिए व्यक्तिगत रूप से तथा अपनी समाज की तरफ से अधिक से अधिक धनराशि तथा खाद्य सामग्री (दाल, चावल, आटा, घी, चीनी, सब्जी आदि) दान स्वरूप देकर पुण्य के भागी बनें तथा वेद प्रचार के इस महत्त्वपूर्ण कार्य में अपना योगदान प्रदान करें। वेद प्रचार शिविर का विस्तृत कार्यक्रम बहुत शीघ्र आर्यजनों के समक्ष प्रस्तुत किया जायेगा। इस सम्बन्ध में विशेष जानकारी के लिए सभा कार्यालय से सम्पर्क किया जा सकता है। अपना सहयोग या दान राशि सार्वदेशिक सभा कार्यालय में व्यक्तिगत रूप से अथवा **"सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा"** के नाम चैक, बैंक ड्राफ्ट आदि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के नाम भेजने की कृपा करें।

निवेदक

स्वामी आर्यवेश	**स्वामी दिव्यानन्द**	**स्वामी प्रणवानन्द**	**प्रो. विट्ठलराव आर्य**	**पं. माया प्रकाश त्यागी**
प्रधान-सार्व.सभा	प्रधान वैदिक विरक्त मण्डल	कोषाध्यक्ष वैदिक विरक्त मण्डल	मंत्री-सार्व.सभा	कोषाध्यक्ष-सार्व.सभा
गोविन्द सिंह भण्डारी	**सुखदेव वर्मा**	**दयाकृष्ण काण्डपाल**	**इं. प्रेम प्रकाश शर्मा**	**डॉ. वीरेन्द्र पंवार**
प्रधान-आ.प्रति. सभा उत्तराखण्ड	कोषाध्यक्ष-आ.प्रति. सभा उत्तराखण्ड	मंत्री-आ.प्रति. सभा उत्तराखण्ड	प्रधान, आर्य समाज देहरादून	प्रबन्धक आर्य समाज हरिद्वार

आर्य समाज की गतिविधियाँ

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में शहीद सैनिकों को दी श्रद्धाजंलि आंतकवादियों व उनके संरक्षको से सख्ती से निपटा जाये

जे.एन.यू.में हुई देश द्रोही घटना दुर्भाग्यपूर्ण-राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

जन्तर मन्तर पर आयोजित विरोध प्रदर्शन में डा.अनिल आर्य,प्रवीन आर्य,स्वामी ओम जी,महेन्द्र भाई,कै.अशोक गुलाटी,त्रिलोक आर्य,हरिचन्द आर्य व सुषमा शर्मा

नई दिल्ली। मंगलवार, 23 फरवरी 2016, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् नई दिल्ली व आर्य समाज की ओर से नई दिल्ली के "जन्तर मन्तर" पर कश्मीर आंतकवादी हमले में शहीद जवानों को यज्ञ कर श्रद्धाजंलि अर्पित की गई तथा गत दिनों जे.एन.यू. में घटित देश द्रोही घटना की कड़ी निन्दा करते हुए दोषियों को अविलम्ब गिरफतार करने की मांग की गई। परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य के नेतृत्व में श्रद्धांजलि यज्ञ व राष्ट्र रक्षा यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सैंकड़ो आर्य समाजियों ने पहुँच कर देश की एकता व अखण्डता की रक्षा की शपथ ग्रहण की।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.अनिल आर्य ने कहा कि समय की मांग है कि सरकार आंतकवादियों व उनके संरक्षको को सख्ती से कुचले, देश की रक्षा की कीमत पर कोई समझौता नहीं हो सकता। डा.आर्य ने रोष जताया की अफजल गुरू का महिमा मण्डन करने वाले कभी देश भक्त नहीं हो सकते, जे.एन.यू. विश्वविद्यालय की घटना अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण व चिन्ताजनक है कि शिक्षा के मन्दिर में कैसी युवा पीढ़ी का निर्माण हो रहा है। आज पूरी शिक्षा प्रणाली पर पुर्नविचार करने व उसे बदलने की अवश्यकता है जिससे देशभक्त, ईश्वर भक्त, संस्कारवान व चरित्रवान युवा शक्ति का निर्माण हो जिस पर राष्ट्र व समाज भरोसा कर सके।

परिषद् के राष्ट्रीय महामन्त्री महेन्द्र भाई ने कहा कि जब तक देश में एक समान आचार सहिंता लागू नहीं होगी .1ब तक समस्या का हल नहीं होगा। उन्होंने कहा कि देश की वर्तमान परिस्थितियों में युवा पीढ़ी का दायित्व बढ़ गया है, अब युवको को जातिवाद, भ्रष्टाचार, क्षेत्रवाद के विरूद्वआगे आना होगा। जिन स्वपनों के भारत की कल्पना हमारे शहीदों ने की थी उनको पूरा करना है। भारतीय सेन. के वीर जवानों को बधाई दी गई की वह हर परिस्थिति में देश की रक्षा करते हैं।

श्री प्रवीन आर्य (प्रान्तीय महामन्त्री, उ.प्र.) ने कहा कि देश की आजादी की लड़ाई में 80 प्रतिशत लोग आर्य समाजी थे,.इसलिये आर्य समाज आज मूक दर्शक बन कर नहीं रह सकता। यह देश शहीदों की अमानत है। आर्य नेता राजेश मेहन्दीरता, विजय सब्रवाल, पूर्व राजदूत विद्यासागर वर्मा, अरूण आर्य, हरिचन्द आर्य, सुदेश भगत, कै. अशोक गुलाटी, गजेन्द्र चौहान, जीवनप्रकाश शास्त्री, भगतसिंह राठी, सुषमा शर्मा, जितेन्द्रसिंह आर्य, प्रदीप गोगिया, अंकुर आर्य, शिवम मिश्रा, माधवसिंह आदि प्रमुख रूप से उपस्थित थे। प्रधानमन्त्री व केन्द्रीय गृहमन्त्री के नाम ज्ञापन भी दिया गया।

आर्य समाज के जीर्णोद्धार की अपील दानी महानुभाव सहयोग करें

आर्य समाज मंदिर सिहोर, महेन्द्रगढ़, हरियाणा में खसरा नं.–128, खबा–1.00 कनाल (एक कनाल) में सन् 1963 से आर्य समाज मंदिर बना हुआ है। अब उसके जीर्णोद्धार का कार्य चल रहा है जो महानुभाव (दानी सज्जन) दान देना चाहते हैं वे आर्य समाज सिहोर के खाता संख्या–001634001100180 कोपरेटिव बैंक लि. कनीना, जिला–महेन्द्रगढ़ में भेजने का कष्ट करें। उपरोक्त खाता आर्य समाज सिहोर का है।

– नोबत सिंह आर्य, संरक्षक, आर्य समाज सिहोर, महेन्द्रगढ़, हरियाणा, मो.:–9813392157

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर – घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

लागत मूल्य 3100/- रुपये

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

भारी छूट पर उपलब्ध

एक लाख रुपये अग्रिम देने वाले महानुभावों का चित्र तथा संक्षिप्त परिचय वेद सैट में प्रकाशित किया जायेगा तथा दस वेद सैट उन्हें निःशुल्क प्रदान किए जायेंगे।

3100/- रुपये का एक वेद सैट 25 प्रतिशत की छूट पर उपलब्ध है

10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। **डाक व्यय 225/- रुपये अलग से देना होगा।** प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी। अपना आदेश **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

-: प्रकाशक :-

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002

वेद एवं ज्योतिष सम्मेलन (संगोष्ठी) का भव्य आयोजन

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के सौजन्य से तथा वैदिक मिशन मुम्बई की ओर से दिनांक 26–27 मार्च, 2016 को आर्य समाज सान्ताक्रुज मुम्बई में वेद एवं वेदांग ज्योतिष विषय पर एक सम्मेलन संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती, स्वामी धर्मानन्द जी, स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित रहेंगे। इनके अतिरिक्त, स्वामी ब्रह्मानन्द जी, श्री मिठाई लाल सिंह जी, श्री अरुण अबरोल, कै. रुद्रसेन जी आर्य, श्री चन्द्रभानु जी आर्य, प्रधान आर्य समाज न्यूयार्क, अमेरिका, ठा. विक्रम सिंह जी सहित अनेकों विद्वान तथा आर्य नेता पधार रहे हैं। इस कार्यक्रम में विद्वानों द्वारा ग्रह–उपग्रह, नक्षत्र, लग्न, मुहुर्त, जन्म कुण्डली तथा फलित ज्योतिष आदि विषयों पर गहन चिन्तन किया जायेगा। सम्पूर्ण कार्यक्रम, आर्य - समाज मुम्बई विट्ठलभाई पटेल रोड सान्ताक्रुज (पश्चिम) मुम्बई में सम्पन्न होगा। इस अवसर पर 26 मार्च को विशेष यज्ञ सहित प्रातः 7 बजे से रात्रि 9 बजे तक विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे। 27 मार्च को प्रातः 8 बजे से विशेष यज्ञ के उपरान्त 4.30 बजे तक विभिन्न कार्यक्रमों में आपकी उपस्थिति प्रार्थनीय है।

– सोमदेव शास्त्री, अध्यक्ष वैदिक मिशन मुम्बई

योग शिविर का आयोजन

आनन्दधाम उधमपुर में दिनांक 17 से 24 अप्रैल, 2016 तक योग शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इस शिविर में महात्मा भगवान देव चैतन्य, आचार्य संदीप आर्य व अन्य विद्वत्जनों का मार्गदर्शन प्राप्त होगा। 17 अप्रैल को सायं 4 बजे तक शिविर स्थल पर अवश्य पहुँच जावें। इच्छुक शिविरार्थी अपने पंजीकरण एवं विस्तृत जानकारी हेतु सम्पर्क करें।

– भारत भूषण आनन्द, मो.:–9419107788

वैदिक सार्वदेशिक के सदस्यों से निवेदन

वैदिक सार्वदेशिक पत्रिका के उन ग्राहकों से विनम्र निवेदन है जिनका वार्षिक शुल्क समाप्त हो चुका है। वे शीघ्र अपना वार्षिक शुल्क 250/- रुपये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय में भिजवाने की व्यवस्था करें, अन्यथा भविष्य में उन्हें नियमित रूप से पत्रिका भेज पाना सम्भव नहीं हो सकेगा, और उनका नाम ग्राहक सूची से हटा दिया जायेगा। वैदिक सार्वदेशिक का वार्षिक शुल्क 250/- रुपये एवं आजीवन शुल्क 2500/- रुपये है। जो महानुभाव इस पत्रिका को मंगाना चाहें वह उपरोक्त राशि चैक/ड्राफ्ट अथवा धनादेश द्वारा "सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा" के नाम से सभा कार्यालय "महर्षि दयानन्द भवन" 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर भेजें। देश-विदेश में हजारों की संख्या में भेजे जाने वाले वैदिक सार्वदेशिक को प्रति सप्ताह अपने घर पर प्राप्त करने के लिए शीघ्र सम्पर्क करें।

-व्यवस्थापक, वैदिक सार्वदेशिक

POSTED AT N.D.P.S.O., N.D.-01 On 4–5 मार्च, 2016
प्रकाशन की तिथि : 3 मार्च, 2016
वैदिक सार्वदेशिक
03 से 09 मार्च, 2016
पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/15-17
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2015-17]

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

वैश्वानर देव !

स इत्तन्तुं स वि जानात्योतुं स वक्त्वान्यृतुथा वदाति।
य ईं चिकेतदमृतस्य गोपा अवश्चरन्परो अन्येन पश्यन्।।

—ऋ० ६/६/३

ऋषिः—**भरद्वाजो बार्हस्पत्यः**।। देवता—**वैश्वानरः**।। छन्दः—**प्रस्तारपंक्तिः**।।

विनय—मैं नहीं जानता कि जो संसाररूपी वस्त्र बुना जा रहा है उसका ताना क्या है, बाना क्या है और जब कभी बुनते हुए इसका कोई तन्तु टूट जाता है तो उसे जोड़ने वाला कौन है। हाँ, वह वैश्वानर अग्नि अवश्य जानता है। वह ही इस संसार रूपी वस्त्र के लिए ताना तनना और बाना भरना जानता है। वह अग्नि ऋक् (ज्ञान) के ताने में यजुः (कर्म) का बाना डालता हुआ इस महायज्ञ के वस्त्र को निरन्तर बुन रहा है और यही समय–समय पर किसी ज्ञानतन्तु के विच्छिन्न होने पर नया ज्ञान देने द्वारा, वक्तव्य के बोलने द्वारा, उसे जोड़ता रहता है।

यह वैश्वानर अग्नि कौन है? यह वह अग्नि है जो इस विश्व–शरीर का अग्नि है, जो असंख्य व्यष्टि (वैयक्तिक) अग्नियों को समष्टि (सामूहिक) अग्नि से एक करने वाला है, अतएव जो व्यक्तियों के मरते रहने पर भी अमर रहने वाला है, जो अमरत्व का रक्षक 'अमृतस्य गोपा' है। यह अग्नि इस सब संसार को ज्ञान, चैतन्य, स्फूर्ति दे रहा है। यह अपने व्यष्टिरूप से जहां नीचे पृथिवी पर पैर बनकर विचर रहा है, वहां यह अपने समष्टिरूप से ऊपर द्युलोक में नेत्र होकर सबको देख रहा है। भाईयो ! क्या तुमने 'वैश्वानर अग्नि' को पहचाना? यह वह अग्नि है जिसमे या जिसके द्वारा यह संसार रूपी महान् यज्ञ हो रहा है।

शब्दार्थ—**सः**=वह वैश्वानर अग्नि **इत्**=ही **तन्तुम्**=ताना तनने को और **सः**=वही **ओतुम्**=बाना भरने को **विजानाति**=जानता है, **सः**=वह **ऋतुथा**=समय–समय पर **वक्त्वानि**=वक्तव्य ज्ञानों को भी **वदाति**=बोलता है, प्रकाशित करता है। **यः**=जो (वैश्वानर अग्नि) **अमृतस्य गोपाः**=अमरत्व का रक्षक हो **अवः**=इधर नीचे **चरन्**=चलता हुआ और **परः**=ऊपर–ऊपर **अन्येन**=अपने दूसरे रूप से **पश्यन्**=देखता हुआ **ईम्**=इस संसार को **चिकेतत्**=जान रहा है, इसमें ज्ञान–चैतन्य दे रहा है।

साभार- 'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

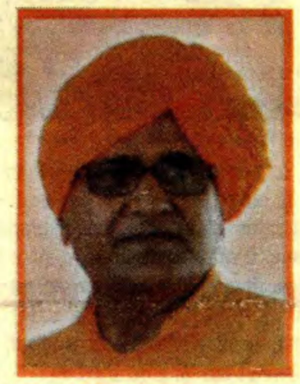

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें

www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई–मेल : aryavesh@gmail.com

Tel. :-011-23274771

आर्य समाज के महान नेता, त्यागी–तपस्वी संन्यासी,
युवाओं के प्रेरणा स्रोत स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज के 79वें जन्मदिवस के अवसर पर

स्वामी इन्द्रवेश

चतुर्वेद पारायण महायज्ञ

समय : प्रतिदिन प्रातः 8 से 11 बजे तक, सायं 3 से 6 बजे तक

ब्रह्मा : स्वामी चन्द्रवेश जी आचार्य स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ (आश्रम), ग्राम–टिटौली, जिला–रोहतक (हरि.)

हरियाणा में सामाजिक सौहार्द बनाने एवं शांति स्थापित करने के लिए यह चतुर्वेद पारायण महायज्ञ सामाजिक सौहार्द यज्ञ के रूप में आयोजित किया जायेगा।

अध्यक्षता : स्वामी आर्यवेश जी, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली–2

दिनांक : 2 मार्च, 2016 (बुधवार) से 13 मार्च, 2016 (रविवार) तक

संकल्प : इस महायज्ञ में समाज के प्रतिष्ठित प्रतिनिधि, डॉक्टर, वकील, शिक्षाविद् जन प्रतिनिधि, धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक नेता एवं हजारों स्त्री–पुरुष, छात्र एवं छात्राएँ आहुति देकर कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी एवं पाखण्ड के विरुद्ध संकल्प लेंगे।

स्थान : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ (आश्रम), ग्राम–टिटौली, जिला–रोहतक (हरि.)

मुख्य आकर्षण
चतुर्वेद पारायण महायज्ञ
महिला दिवस पर विशेष कार्यक्रम
स्वामी इन्द्रवेश जयंती समारोह
कार्यकर्ता अभिनन्दन समारोह

विशेष : महायज्ञ में उच्चकोटि के संन्यासी, विद्वानों एवं भजनोपदेशकों द्वारा कार्यक्रम निरन्तर चलता रहेगा। यजमान बनने के इच्छुक महानुभाव अभी से अपनी सूचना देकर कृतार्थ करें। आप सभी महायज्ञ में आहुति डालकर राष्ट्र के नव–निर्माण में अपनी भूमिका निभाएं।

आयोजक

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्

कार्यालय : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ (आश्रम), ग्राम–टिटौली, जिला–रोहतक (हरि.)
सम्पर्क : 9416630916, 9354840454, 9466430772, 01262–286900

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।